पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानव दर्शन सामाजिक-आर्थिक पहलू

करतार सिंह, सहायक आचार्य, दीन दयाल उपाध्याय अध्ययन केन्द्र,
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का जन्म 25 सितंबर, 1916 में मथुरा के छोटे से गांव नगला चन्द्रभान में हुआ था। उनका उम्र 3 वर्ष थी जब उन्होंने अपनी माता जी का देहांत देखा। उन्होंने अपने पिता जी का देहांत और अपनी माता जी का देहांत होने के समय अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में निराश हो गए। पंडित जी ने इस समय से देश के सरकारी व्यक्तित्वों में मुलाकात की। उन्होंने अपने पिता जी के शौक बचपन से ही था इंटरमीडियेट की परीक्षा में अपने शताब्दी राष्ट्रीय रूप से भारत की सहभागी होने का कैरियर की उपलब्धि।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का अन्तिम निधन 8 अगस्त, 1980 को हुआ था। उन्होंने अपने जीवन में सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में अद्वितीय निर्मलता दिखाई। उन्होंने भारत के स्वातंत्र्य युद्ध के दौरान भी अपनी सेवा की। उन्होंने भारत के समाजीय और आर्थिक क्षेत्रों में अद्वितीय कार्य किया।

राजनीतिक में 'वाद' का चलन ब्रिटिश शासन की विरोधाभास है। समाजवाद, पूंजीवाद और सामाजिक व्यवस्थाओं के बीच पंडित जी का एकात्म मानव दर्शन भारत में एक दीप ज्योति बनकर उभरा। उन्होंने भारत के समाज की राष्ट्रीयता की विचारधारा को समर्पित किया।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जीवनी के विविध आयाम हैं। कम उम्र में ही उन्होंने अलविदा कहने वाले अंतिम निधन को समर्पित किया।
एकात्म मानववाद के रूप में पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भारत की तत्कालीन राजनीति और समाज को दिशा में मुड़ने की सलाह दी, जो सौ फीसदी भारतीय है। एकात्म मानववाद के इस वैचारिक दर्शन का प्रतिपादन पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने मुम्बई में 22 से 25 अप्रैल, 1965 में चार व्याख्यानों में दिये गए भाषण में किया। इस भाषण में उन्होंने एक मानव के समपूर्ण सृष्टि से सम्बन्ध पर व्यापक दृष्टिकोण रखने का काम किया था। वे मानव को विवाहित करके देखने के पक्षधर नहीं थे। वे मानव मात्र को हर दृष्टि से मूल्यवान के बात करते थे जो उनके समपूर्ण जीवन काल में छोटी बड़ी जरूरतों के रूप में समान रखता है। दुनिया के इतिहास में सिर्फ मानव मात्र के लिए अगर किसी एक विचार दर्शन ने समग्रता से चित्र प्रस्तुत किया तो वो एकात्म मानववाद का दर्शन है।

दीनदयाल उपाध्याय एक दाशयतनक, समाजशास्त्री अथवा शास्त्री एवं राजनैतिक व्यंग्याधीत है। इनके द्वारा प्रस्तुत दर्शन को एकात्म मानववाद कहा जाता है, जिसका उद्देश्य एक ऐसा स्तదेशी सामाजिक-आधिक मॉडल प्रस्तुत करना था जिसमें विकास के केन्द्र में मानि हो।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने पश्चिमी पूजीवादी, व्यंग्याधीत एवं मार्क्सवादी समाज दोनो का विरोध किया, लेकिन आधुनिक तकनीक एवं पश्चिमी विज्ञान का स्वागत किया। वे पूजीवादी एवं मार्क्सवादी के मध्य एक ऐसी राह के पक्षधर थे जिसमे समय प्राणतियों के गुण तो मौजूद हो लेकिन उनमे अतिरेक एवं अलगाव जैसे अवगुन न हो। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के भाग्यसाधन पूजीवादी एवं मार्क्सवादी विचार धाराएं केवल मानव के शरीर एवं मन की आवश्यकताओं पर विचार करती है। इसीलिए वे भौतिकवादी उद्देश्य पर आधारित है, जबकि मानव के सर्वजीवी विकास के लिए आधिक विकास भी आवश्यक है। साथ ही इन्होंने एक वर्गीकृत, जातीय और संघर्षपूर्ण सामाजिक व्यवस्था की कल्पना की।

एकात्म नवाद की वर्तमान प्रासंगिकता में भारत विवाह की एक बड़ी आबादी गरीबी में जीवन यापन कर रही है। विवाह भर में विकास के कई मॉडल लाये गये लेकिन आशानु रूप पर प्राप्त हेतु नहीं। अतः दुनिया को एक ऐसे मॉडल का श्रद्धेय दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म नवाद का विसभन्द्न तलाश है जो मानस एवं संस्कार के विचार को एकीकृत और सामाजिक विकास को सुनिश्चित करना है।

दीनदयाल उपाध्याय जी की मान्यता थी कि हिंदू कोई धर्म या सम्प्रदाय नहीं, बल्कि भारत की राष्ट्रीय संस्कृति है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने भारतीय स्वतंत्रता के आग्रह पर सामाजिक संस्कृतिक विभाजन करने वालों के द्वारा विवाह का जिम्मेदार मानते थे। वह हिंदू राष्ट्रवादी थे, जो साथ ही साथ राजनीतिक पुरौढों भी थे। उनका मानना था कि भारत की सांस्कृतिक विविधता ही उसकी अतिरोध की एक हदन विश्व-मंच पर अगुना राष्ट्र बन सकेगा।

कई साल पहले उनके द्वारा चित्रित यह विचार आज माननीय प्रधानमंत्री जी के द्वारा किये जाने वाले व्यंग्यों के कारण मूर्तरूप ले रहा है। आज भारत की सांस्कृतिक विवाहात्मक दुनिया को प्रकाश देने कर रही है, एकात्म मानव दर्शन ही भारत का भाग्यविधाता है।
की धरती सृष्टि के चर-अचर और जड चेतन सबके सुख और समुद्रधि के लिये अराधना, तपसाधना मीराजना की भूमि रही है। इसलिये यह दर्शन विश्व दर्शन भी है, क्योंकि यह समग्र दर्शन है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. लाल, रमन बिहारी: 2003, पन्द्रहवाँ संस्करण शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार रस्तोगी पब्लिकेशन्स, शिवाजी रोड, मेरठ-250002.
2. लाल, रमन बिहारी व सुनीता पलोड 2006, प्रथम संस्करण, शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग आरलाल बुक डिपो, निकट राजकीय इंटर कॉलेज, मेरठ- 250001.
3. मितल, एम0एल0:2004, "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, इंटरनेशनल पब्लिकेशन हाउस, मेरठ |  
4. माथुर, एस॰ एस॰: 1997 "शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा |